IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व, समायोजन, मनोबल एवं कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।"

सीमा शर्मा
पीएचडी, शोधार्थी
महाराज, विनायक ग्लोबल, ग्लोबल,
विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय
प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष
महाराज, विनायक
विश्वविद्यालय, जयपुर

1. भूमिका –

आज का स्वतंत्र भारत एक विकासशील राष्ट्र है। ऐसे राष्ट्र को विकास के उच्चतम शिखर पर ले जाने में शिक्षक, राजनेता, श्रमिक एवं वैज्ञानिक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन सभी में शिक्षक की भूमिका अति महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि समाज में विविध क्षेत्रों के लिए सुयोग्य, उत्तम, कर्मठ तथा श्रेष्ठ व्यक्तित्व एवं उच्च मनोबल वाले व्यक्तियों का निर्माण स्वयं शिक्षक ही करता है।

पंडित श्री दत्त त्रिपाठी के शब्दों में ''भारत देश ही एक ऐसा देश है जहाँ ज्ञान के प्रतिप्रेम सबसे पहले प्रारंभ हुआ था जिसने चिरस्थायी और शक्ति–शली प्रभाव से समाज को दिशा दी। वैदिक युग के मनोषियो से लेकर आधुनिक युग के दार्निकों तक शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं विद्वानों का एक प्रवहण शील क्रम रहा हैं।'' वैदिक काल में शिक्षा का अर्थ जीवन पर्यन्त चलनेवाली उस पक्रिया से समझा जाता था, जो मनुष्य को उन्नत तथा सभ्य बनाती है। वर्तमान काल में शिक्षा के बिना व्यक्ति के अस्तित्व की कल्पना करना कठिन है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1948 में शिक्षा को मौलिक अधिकार घोषित किया गया। मानवाधिकार का वैश्विक घोषणा धारा 26 के अनुसार 'प्रत्येक को शिक्षा का अधिकार है'। इस धारा के अनुसार प्राथमिक और बुनियादी अवस्थाओं में शिक्षा निःशुल्क एवं अनिवार्य होगी। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने बच्चों के अधिकार संबंधी अभिसमय को 1989 में पारित किया जिसे भारत ने 1992 में हस्ताक्षर किया। धारा 28 के अनुसार सभी राज्य विशेषकर बच्चों के अधिकार एवं शिक्षा के अधिकार की प्राप्ति प्रोन्नति के लिए कदम उठायेंगे और प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य और निःशुल्क अथवा मुक्त शिक्षा बनायेंगे। भारतीय संविधान की नीति–निदेशक तत्व धारा 45 भी 14 वर्ष तक के बच्चों की निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा हेतु राज्य को निदर्शित करता है। संविधान की धारा 15, 24, 39, 46, 29, 30, 350 इत्यादि को भी शैक्षिक विकास के परिदृश्य में देखा जा सकता है।

डॉ. डी. एस. कोठारी ने भी शिक्षा समिति की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा है कि, "भारत का भाग्य वास्तव में कक्षा–कक्ष में निर्मित हो रहा है।" शिक्षक देश व बालको के भविष्य का निर्माण करता है। इसलिए देश को उच्च स्तर पर ले जाने और सही दिशा प्रदान करने वाले श्रेष्ठ अध्यापकों के उचित मार्गदर्शन से हम अज्ञान के गहन अंधकार से निरन्तर दिव्य प्रकाश की ओर उन्मुख हुए हैं।

2. अध्ययन का महत्त्व –

इस अध्ययन का महत्त्व एवं उपयोगिता अध्यापकों, विद्यार्थियों, शैक्षिक समितियों एवं शिक्षा संस्थानों के निदेशकों को है। इस शोध से इस बात के स्पष्ट होने की उम्मीद है कि कौन–कौन से घटक अध्यापकों की कार्य संतुष्टि एवं व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं, कौन–कौन से घटक शिक्षकों के मनोबल को कम करते हैं तथा एसे कौन से घटक हैं जिसके कारण उसे समायोजन में समस्या आ रही है। उपर्युक्त कारणों तथा तथ्यों का पता लगाकर हम अध्यापकों के मनोबल, कार्यसंतुष्टि, समायोजन तथा व्यक्तित्व सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण में मदद कर सकते हैं। ताकि इन तमाम् समस्याओं की वजह से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को कम किया जा सकता है एवं व्यावसायिक रूप से इसके दूरगामी परिणाम उभर कर सामने आएंगे। प्रस्तुत शोधकार्य का केन्द्र बिन्दु अध्यापक ही है और यह बोध इस परिकल्पना के साथ किया जा रहा है कि अगर अध्यापक कार्य के प्रति संतुष्ट, उच्च मनोबल, मुखरित व्यक्तित्व वाला एवं सुसमायोजित होगा तो निश्चय ही उसका व्यवहार भी समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए उपयोगी होगा और ऐसा अध्यापक छात्रों के भविष्य को उज्जवल बना सकेगा।

यह सर्वविदित है कि अध्यापक चाहे किसी भी शैक्षिक संस्थान में कार्यरत हो, वह उस संस्थान में अध्ययनरत छात्रों का पथ प्रदर्शक होता है। छात्र अपने अध्यापक की बातों को अन्य की अपेक्षा अधिक महत्त्व देता है। वह (छात्र) अध्यापक द्वारा निर्देशित सभी कार्यों को ध्यानपूर्वक सम्पन्न करता है। यदि अध्यापक द्वारा दिए गए निर्देश उचित नहीं होते हैं, तो इसका नकारात्मक प्रभाव छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। इसके विपरीत यदि अध्यापक द्वारा उचित और प्रभावो शैक्षिक निर्देश छात्रों को दिए गए हैं तो इससे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में उचित सुधार होता है। अध्यापक द्वारा दिए गए शैक्षिक निर्देशों को प्रभावी बनाने के लिए उसके व्यक्तित्व, मनोबल, समायोजन एवं कार्यसंतुष्टि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यावसायिक शिक्षा से सम्बन्धित शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत अध्यापकों के व्यक्तित्व, उनके मनोबल, समायोजन तथा कार्य संतुष्टि से व्यावसायिक शिक्षा पूर्णरूपेण प्रभावित होती है। इस प्रकार की शिक्षा के लिए विभिन्न व्यावसायिक संस्थानों में कार्यरत अध्यापकों के व्यक्तित्व से सम्बन्धित अध्ययन छात्रों को प्रभावी व्यावसायिक शिक्षा प्रदान कर सकेंगे। समाज के विकास में प्रभावी योगदान के लिए विभिन्न शैक्षिक संस्थानों (व्यावसायिक शिक्षा) में कार्यरत अध्यापकों के प्रभावी व्यक्तित्व का तो योगदान है ही साथ उनके मनोबल, कार्यसंतुष्टि तथा समायोजन की भ्मिका भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि कार्यरत शिक्षक का मनोबल ऊँचा नहीं होगा तो उसका शिक्षण प्रभावी नहीं होगा। वह (शिक्षक) छात्रों को पूर्ण मनोयोग से प्रभावी व्यावसायिक ज्ञान प्रदान नहीं कर पाएगा अर्थात् छात्रों को विस्तृत व्यावसायिक ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाएगी। इसी प्रकार शिक्षक की अपने कार्य के प्रति सन्तुष्टि भी व्यावसायिक शिक्षा की प्रभावशीलता के लिए अति आवश्यक है। शिक्षक द्वारा जो भी व्यावसायिक विषयवस्तु का शिक्षण किया जा रहा है, यदि वह स्वयं ही उसके प्रति सन्तुष्ट नहीं है तो छात्र उस अध्यापक के शिक्षण से सन्तुष्ट दिखाई नहीं देंगे। परिणाम यह होगा कि उचित एवं सही व्यावसायिक ज्ञान की प्राप्ति छात्रों को नहीं मिल पाएगी और उनमें व्यावसायिक गुणों का विकास नहीं हो पाएगा। इसलिए आवश्यक है कि व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों में शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षकों में अपने शिक्षण कार्य के प्रति संतुष्टि अवश्य हो। इसी क्रम में सभी प्रकार के शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत

शिक्षकों को अपने छात्रों, पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक वातावरण के साथ समायोजन अति आवश्यक है। यदि शिक्षक या छात्र एक दूसरे के साथ शैक्षिक दृष्टि से समायोजित नहीं हो सकेंगे, ता शिक्षण (व्यावसायिक शिक्षा) के क्षेत्र में प्रभावशीलता नहीं आ पाएगी। अध्यापकों का व्यक्तित्व कितना भी प्रभावी क्यों न हो,

3. अध्ययन की आवश्यकता –

आज प्रगतिशील समाज ने व्यक्ति को बहुत कुछ दिया है। इसके साथ–साथ उसने अनेक समस्याओं को भी जन्म दिया है। जिसके प्रभाव से शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा है। वर्तमान में राजकीय महाविद्यालयों की स्थिति एवं गैर राजकीय महाविद्यालयों की बढ़ती हुई संख्या तथा गिरते हुए शैक्षिक स्तर को देखते हुए शोद्यार्थी को ऐसा अनुभव हुआ कि इसका एक कारण शिक्षक भी है। विशेषकर वेतन, महाविद्यालयी वातावरण, शिक्षक एवं शिष्यों के सम्बन्धों में कड़वाहट इसके प्रमुख कारण रहे हैं। शैक्षिक संस्थानों में ट्यूशन की प्रवृत्ति के बढने के कारण तथा राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण शैक्षिक वातावरण दूषित होता जा रहा है। इससे अधिकांश अध्यापकों का मनोबल सकारात्मक दिशा में बढने के बजाय गिरता हैं। प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अध्यापकों के गिरते हुए मनोबल, व्यक्तित्व सम्बन्धी कारणों, समायोजन सम्बन्धी समस्याओं एवं कार्य के प्रति असंतुष्टि के कारणों की खोज करना है। साथ मे छात्रों की अधिगम एवं शिक्षण अभिक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का भी पता लगाना इस शोध कार्य का उद्देश्य है।

यह तो सर्वविदित है कि वर्तमान समय में सारी शिक्षा का उत्तरदायित्व अध्यापकों के कंधों पर है और अध्यापक वह कुम्भकार है, जो बच्चे रूपी कच्चे घड़े को जैसा आकार और रूप देना चाहे, द सकता है। इस प्रकार यदि यह कहा जाए कि शिक्षक भारत के भविष्य का निर्माता है तो शायद अतिशयोक्ति न होगी, क्योंकि भारत के भविष्य रूपी बच्चों को बनाने एवं बिगाड़ने का दायित्व अध्यापक का ही है। मगर अफसोस की बात यह है कि जो शिक्षक स्वयं अन्धकार में डूबा हुआ है, अपने आप में उलझा हुआ है, वह भारत के भाग्य का निर्माण कैसे करेगा? वर्तमान का यथार्थ यही है। आखिर हो भी क्यों न? अध्यापक ईश्वर का गढ़ा हुआ कोई विशेष फरिश्ता तो है नहीं, जो इस दुनिया से ऊपर उठकर रह सकता है। आखिरकार वह भी तो समाज का ही एक अभिन्न अंग है, अतः उसकी भी कुछ आवश्यकताएँ एवं समस्याएँ जरूर होंगी। अगर उसकी समस्याएँ हल नहीं हो पाती हैं, तो उसका परेशान होना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। इन्हीं परेशानियों की वजह से उसमें (शिक्षक) कार्य के प्रति असन्तोष, शिक्षण व्यवसाय के प्रति उसके मनाबल का गिरना, शैक्षिक एवं सामाजिक क्षेत्र में समायोजित होने की समस्या एवं व्यक्तित्व में बदलाव आ जाता है।

4. अध्ययन का शीर्षक –

"विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व, समायोजन, मनोबल एवं कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।"

5. कठिन शब्दों का स्पष्टीकरण –

प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है:

(a) व्यावसायिक शैक्षिक संस्थान
(b) व्यक्तित्व
(c) समायोजन
(d) मनोबल
(e) कार्य संतुष्टि

6. शोधकार्य का सीमांकन –

प्रस्तुत शोधकार्य में सम्पूर्ण राजस्थान के पांच संभागों क्रमशः बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, कोटा व अजमेर में स्थापित विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को शामिल किया गया है।

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय।
2. अभियांत्रिकी महाविद्यालय।
3. विधि महाविद्यालय।

7. अध्ययन के उद्देश्य –

शोध एक सोद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। प्रत्येक क्षेत्र में शोध कार्यों का नियोजन किया जाता है, जिनका अपना विशिष्ट उद्देश्य होता है। क्योंकि उद्देश्यों के अभाव में किया गया कार्य निरर्थक होता है। उद्देश्य जितने सुनियोजित एवं स्पष्ट होंगे, उन पर आधारित कार्य भी उतना ही सरल एवं सुनियोजित होगा।

1. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा अभियांत्रिकी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. राजस्थान राज्य में स्थित अभियांत्रिकी महाविद्यालयों एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. राजस्थान राज्य में स्थित अभियांत्रिकी महाविद्यालयों एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों एंव अभियांत्रिकी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. राजस्थान राज्य में स्थित अभियांत्रिकी महाविद्यालयों एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन करना।

8. शोध की परिकल्पनाएँ –

परिकल्पना शोध की समस्या का सम्भावित समाधान होता है। वैज्ञानिक शोध की सभी क्रियाओं का नियोजक परिकल्पनाओं की पुष्टि के लिए किया जाता है। परिकल्पना शोध प्रक्रिया के नियोजन के लिए दिशा तथा आधार प्रदान करती है।

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्त्ता ने निम्नलिखित परिकलपनाओं का निर्माण किया है:–

1. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा अभियांत्रिकी महाविद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षकों के व्यक्तित्व मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. राजस्थान राज्य में स्थित अभियांत्रिकी महाविद्यालयों तथा विधि महाविद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. राजस्थान राज्य में स्थित अभियांत्रिकी महाविद्यालयों एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की काय सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. राजस्थान राज्य मे स्थित अभियांत्रिकी महाविद्यालयों एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

9 अनुसंधान की अध्ययन विधि –

शैक्षिक अनुसंधान के अन्तर्गत ऐतिहासिक, प्रायोगिक, व्यक्तिगत अध्ययन, अर्न्तवस्तु अध्ययन, सर्वेक्षणात्मक विधि जनमत अध्ययन, सहसम्बन्ध अध्ययन एवं विकासात्मक अध्ययन विधि है।

शोध में विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यक्तित्व समायोजन एवं कार्य सन्तुष्टि के तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा उनकी समस्याओं को जानने का प्रयास किया गया है।

अनुसंधान की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा "सर्वेक्षण अनुसंधान विधि" का चयन किया गया है।

10. न्यादर्श –

न्यादर्श किसी भी अनुसंधान कार्य की आधारशिला है। यह आधारशिला जितनी सुदृढ होगी, अनुसंधान के परिणाम उतने ही विश्वसनीय एवं परिशुद्ध होंगे। प्रतिदर्श को तभी उपयुक्त माना जाता है, जब वह सम्पूर्ण समष्टि का प्रतिनिधित्व करें।

11. न्यादर्श चयन विधि –

न्यादर्श चयन हेतु राज्य के शैक्षिक संभागों के मुख्यालयों में स्थित विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को चुनने हेतु निर्णयात्मक एवं यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया।

12. महाविद्यालयों का चयन –

प्रत्येक संभाग के मुख्यालयों पर स्थित व्यावसायिक महाविद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि के अन्तर्गत लॉटरी विधि से किया जायेगा। इसके अन्तर्गत संभागानुसार स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, विधि महाविद्यालय एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालयों का नाम पृथक–पृथक लिखकर पृथक–पृथक डिब्बों मे डाल दिया जायेगा।

13. शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण –

(अ) बहु आयामी व्यक्तित्व मापनी
(ब) मंगल अध्यापक समायोजन मापनी
(स) अध्यापक मनोबल मापनी
(द) अध्यापक कार्य सन्तोष प्रश्नावली

14. विश्वसनीयता –

इस मापनी की विश्वसनीयता अर्द्धविच्छेद विधि तथा परीक्षण–पुनः–परीक्षण विधि दोनों विधियों द्वारा ज्ञात की गई है। अर्द्धविच्छेद विधि द्वारा छः उप भागों के लिए गणना की गई।

15. वैद्यता –

मापनी सन्तुष्ट वैद्यता रखती है, क्योंकि उचित रीति से पदों का चयन किया गया तथा शिक्षाविदों की राय के मुताबिक इसको अन्तिम रूप दिया गया है बाह्य वैद्यता के निर्धारण के लिए टैस्ट के माध्यम से वैद्यता गुणांक की गणना की गई।

(1) विषय सूची वैद्यता।
(2) घटक वैद्यता।
(3) विशिष्ट वैद्यता।

16. शोध की क्रियाविधि –

शोधकत्री सर्वप्रथम सर्वेक्षण विधि द्वारा चयनित पांचों संभागों में स्थित महाविद्यालयों मं जायेगा। तदोपरान्त चयनित महाविद्यालयो के प्राचार्यों से मिलकर वहाँ कार्यरत शिक्षकों का चयन किया जायेगा। शिक्षकों का चयन करते समय निम्नांकित तथ्यों को ध्यान में रखा जायेगा–

1. पुरूष एवं महिला शिक्षकों का चयन समान होना चाहिए।
2. वे सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हो।
3. चुने गए शिक्षक शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों, विधि महाविद्यालयों तथा अभियांत्रिकी महाविद्यालयों से होने चाहिए।
4. जो अध्यापक चुने गये हैं, वे उपर्युक्त व्यावसायिक महाविद्यालयों में कार्यरत होने चाहिए।

शिक्षकों के चयन के पश्चात शोधकर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन हेतु सभी शिक्षकों को एक जगह हॉल में बैठाकर अध्यापक समायोजन मापनी, व्यक्तित्व मापनी, अध्यापक कार्यसंतोष मापनी तथा अध्यापक मनोबल मापनियों को उन्हें भरने के लिए दी जायेगी। भरने से पहले सभी को समान दिशा निर्देश दिए जायेंगे तथा दत्त संकलन में निम्नांकित तथ्यों को ध्यान में रखा जायेगा–

1. सभी अध्यापकों को चारों उपकरण समान समय पर दिए जाये।
2. कोई भी अध्यापक अपना उत्तर–पत्रक कोतब तक न भरें जब तक कहा न जाये।
3. सभी अपने–अपने स्वविवेक से उत्तर–पत्रक को भरे तथा दी गई जानकारी को गोपनीय रखें।
4. उन्हें बताया दिया जायेगा कि इन परीक्षणों का उनकी नौकरी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अतः बिल्कुल सही जानकारी देने की चेष्टा करें।
5. भरने के पश्चात सभी से उत्तर–पत्रक एक साथ एकत्रित कर लिये जायेंगे।

17. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

शोधकत्री द्वारा शोध के परिणाम जानने के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक मान जैसी सांख्यिकी तकनीकों का प्रयोग किया।

- मध्यमान।
- प्रमाप विचलन।
- क्रांतिक अनुपात।

18. सारणीयन एवं दत्त वि"लेशण –

आंकड़ों की व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण कार्य उनका वि"लेशण एवं व्याख्या करना है। अनुसंधान में आंकड़ों के संकलन, सारणीयन तथा सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग के बाद निश्कर्शों के वि"लेशण एवं उनकी व्याख्या का महत्वपूर्ण स्थान है।

अनुसंधान में केवल तथ्यों का ढ़ेर बना लेने से ही वास्तविक अर्थ या उसके परिणाम स्पश्ट नहीं हो सकते।

डब्ल्यू कुक के अनुसार,

"वैज्ञानिक वि"लेशण, अध्ययन के तथ्यों परिणामों तथा वैज्ञानिक ज्ञान के संबंध की खोज करता है।"

19 सारणीयन का अर्थ एवं परिभाशा वि"लेशण एवं निश्कर्श –

सामाजिक अनुसंधान में आंकड़ों के सारणीयन का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। अनुसंधानकर्त्ता द्वारा एकत्र किए गए आंकड़े अत्यन्त व्यवस्थित होने के साथ ही जटिल प्रकृति के भी हो सकते हैं। अतः विशय से सम्बन्धित समस्त पक्षों की स्पश्ट विवेचना के लिए उन्हें व्यवस्थित, बोधगम्य, स्पश्ट एवं सुगम बनाना अनिवार्य होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में अपनी तथ्यांक सामग्री को व्यवस्थित ढ़ंग से प्रस्तुत करने तथा उसके वि"लेशण एवं व्याख्या करने का भी प्रयास किया है। यहां कामकाजी एवं गैर कामकाजी विद्यार्थियों के बालकों के अध्ययन के लिए पूरे भाोध को बांटा है।

20. सारांश –

शिक्षा सभ्य, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील मानव समाज के लिये एक आधारशीला का निर्माण करती है। शिक्षा ही वह एकमात्र साधन है जो जानवर और इंसान में फर्क कर सकती है। शिक्षा ही वह ज्योति पुंज है जो मानव मस्तिश्क के अन्धकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश को आलोकित करती है जैसा कि विश्णु पुराण में कहा गया है– 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् विद्या मानव को मुक्ति का मार्ग दिखाती है। विज्ञान और तकनीकि पर आधारित इस दुनिया में, शिक्षा ही खु"हाली, जीवन स्तर का निर्धारण करती है, परन्तु आज बालकों में पा"चात्य संस्कृति का प्रवे"ा बढ़ता जा रहा है। शिक्षा के द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है और हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है।

आज प्रगतिशील समाज ने व्यक्ति को बहुत कुछ दिया है। इसके साथ–साथ उसने अनेक समस्याओं को भी जन्म दिया है। जिसके प्रभाव से शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा है। वर्तमान में राजकीय महाविद्यालयों की स्थिति एवं गैर राजकीय महाविद्यालयों की बढ़ती हुई संख्या तथा गिरते हुए शैक्षिक स्तर को देखते हुए शोद्यार्थी को ऐसा अनुभव हुआ कि इसका एक कारण शिक्षक भी है। विशेषकर वेतन, महाविद्यालयी वातावरण, शिक्षक एवं शिष्यों के सम्बन्धों में कड़वाहट इसके प्रमुख कारण रहे हैं। शैक्षिक संस्थानों में ट्यूशन की प्रवृत्ति के बढने के कारण तथा राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण शैक्षिक वातावरण दूषित होता जा रहा है। इससे अधिकांश अध्यापकों का मनोबल सकारात्मक दिशा में बढने के बजाय गिरता हैं। प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अध्यापकों के गिरते हुए मनोबल, व्यक्तित्व सम्बन्धी कारणों, समायोजन सम्बन्धी समस्याओं एवं कार्य के प्रति असंतुष्टि के कारणों की खोज करना है। साथ मे छात्रों की अधिगम एवं शिक्षण अभिक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का भी पता लगाना इस शोध काय का उद्देश्य है।

21. आवश्यकता एवं महत्त्व –

आज प्रगतिशील समाज ने व्यक्ति को बहुत कुछ दिया है। इसके साथ–साथ उसने अनेक समस्याओं को भी जन्म दिया है। जिसके प्रभाव से शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा है। वर्तमान में राजकीय महाविद्यालयों की स्थिति एवं गैर राजकीय महाविद्यालयों की बढ़ती हुई संख्या तथा गिरते हुए शैक्षिक स्तर को देखते हुए शोद्यार्थी को ऐसा अनुभव हुआ कि इसका एक कारण शिक्षक भी है। विशेषकर वेतन, महाविद्यालयी वातावरण, शिक्षक एवं शिष्यों के सम्बन्धों में कड़वाहट इसके प्रमुख कारण रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अखण्ड ज्योति : सितम्बर, 2006, जनजागरण प्रेस मथुरा से मुद्रित, पेज – 60–62
2. अग्रवाल, जे0 सी0 : शैक्षिक अनुसंधान, नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, 1966
3- अग्रवाल, एन0 वी0 : "Job satisfaction and General Adjustment of Indian white Collar Workers" Indian Journal of Industrial Relations, 1971
4. अमूधा देवी, एन0 वी0 (2003) : "राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में कार्यरत महिला प्रवक्ताओं के कार्यसंतोष का अध्ययन।"
5. अरोड़ा रीता : शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, पेज. 212–213
6. कोठारी, डी0 एस0 : कोठारी कमीशन की रिपोर्ट 1946 आधार पर, पेज. 21–24
7. चन्द, रमेश (2005) : "खेलकूद सुविधाओं के सम्बन्ध में हिमाचल प्रदेश के हाईस्कूलों के शारीरिक शिक्षकों के कार्यसंतोष तथा कार्य अभिप्रेरणा का अध्ययन।"
8. जायसवाल, रश्मि (2007) : "सरस्वती शिशु मंदिर के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन।"
9. जोहन्सन (1973) : "नेतृत्व व्यवहार के बोध के लिए मनोबल का अध्ययन।"
10. तिरूपति, के0 के0 (2003) : "उडीसा के प्राथमिक विद्यालयों की महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि के सम्बन्ध में भूमिका–निर्वाह एवं भूमिका दबाव पर एक अध्ययन।
11 पुष्पम्, ए0 एम0 एल0 (2003) : "कोयम्बटूर मे कार्यरत महिला शिक्षकों का कार्य संतोष एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति उनकी अभिवृति का अध्ययन।"
12. भारद्वाज, बी0 पी0 (1999) : "छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शिक्षाविदों की कार्यसंतुष्टि एवं मनोबल के सम्बन्ध में डाईट्स के शैक्षिक वातावरण का अध्ययन।"
13. मल्होत्रा, ए0 (2002) : "दिल्ली के राजकीय एवं गैर राजकीय सीनियर सैकेण्डरी विद्यालयोंके प्राचार्यों की नेतृत्व शैली का सांगठनिक वातावरण एवं अध्यापकों के कार्यसंतोष पर प्रभाव का अध्ययन।"